शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में नारी जीवन की समस्याएं

प्राप्तिः 03.03.2022
स्वीकृतः 15.03.2022

डॉ० मंजरी वर्मा
मेरठ
ईमेलः *drmanjariv@gmail.com*

सारांश

भारत मे नारी के सामाजिक अधिकार की बड़ी–बड़ी बातें गुलामी के दौर में भी हाती थी और आजादी के सात दशक बाद भी उसी तरह होती है। इक्का–दुक्का अपवादो को किनारे रख दें तो नारी के अधिकारो को लेकर ढर्रा वही पुराना है। प्रेमचंद ने नारी के इस जीवन को बेहद करीब से देखा, महसूस किया और फिर उस एहसास को सहज रूप से साहित्यक कैनवास पा ज्यों का त्यों उकेर दिया है। प्रेमचंद की रचनाओं में इस दौर की नारी समस्याओं का चित्रण ह्रयस्पर्शी है। शब्दों को इस तरह कड़ियों में जोड़ा गया है जैसे तस्वीरें आंखों के सामने चल रही हो। नारी समस्याओं के साथ प्रेमचंद सामयिक सामाजिक व्यवस्था के सामने मुखर होकर उनके निस्तारण का मार्ग भी दिखाते हैं।

नारी और पुरूष एक दूसरे के पूरक होने के साथ–साथ समाज के अभिन्न और अनवार्य अंग कहे जाते हैं। सामाजिक व्यवस्था का संतुलन और संगठन भी उनके पारस्परिक संबंधों पर निर्भर करता है। दोनों का पारस्परिक सहयोग समाज की प्रगति की दिशा और दशा तय करता है। मगर नारी पुरूष के संबंधों का तनाव एवं संघर्ष सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न करने वाला है। प्रेमचंद युगीन भारतीय समाज में नारी और पुरूष के संबंधों की समस्याओं के लिए परंपरागत जीवन मूल्यों एवं सामाजिक आदर्शों को जिम्मेवार माना जा सकता है।

नैतिकता और आदर्श के नाम पर भारतीय नारी को जो अनुज्ञाएं झेलनी पड़ी वह कालांतर में उसके लिए सामाजिक अवरोध की बेड़ियां बन गई। ऐसी बेड़ियों में जकड़ी हुई नारी का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहा या यूं कहें कि प्रेमचंद युगीन समाज में नैतिकता का दोहरा मानदंड प्रचलन में था। जिन चीजों के लिए कभी पुरूषों की आलोचना नहीं हुई, उन्हीं के कारण नारी को पतिता और कुलटा कही जाती थी।

नारी और पुरूष की सामाजिक स्थिति के वैषम्य में तथा उसके परिणामस्वरुप उत्पन्न नारी जीवन के समस्याओं को प्रेमचंद ने सामाजिक दृष्टि से परखा था। उनके सामने नारी जीवन की समस्याएं किस तरह विद्यमान थी इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि प्रेमचंद के प्रारंभिक उपन्यासों 'प्रेमा', 'वरदान', 'सेवासदन' आदि का केंद्रबिंदु नारी और उसकी जीवन की समस्याएं ही हैं। प्रेमचंद ने अपने युग की समस्त समस्याओं को इसी प्रक्रिया के माध्यम से परखा था। इसी कारण प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों में तत्कालीन सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण उभर आया है। प्रेमचंद साहित्य में नारी जीवन की समस्याएं ज्वलंत रूप से विद्यमान हैं। इन समस्याओं को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में विभाजित कर देखना आवश्यक है।

विवाह पूर्व की समस्याएं

प्रेमचंद युगीन नारी जीवन की अधिकांश समस्याएं वैवाहिक जीवन से संबद्ध थी लेकिन सर्वांगीण दृष्टि से विचार करने पर प्रतीत होता है कि अधिकांश समस्याओं के बीज उन परिस्थितियों में निहित रहते हैं जिनमें विवाह से पूर्व नारी का जीवनक व्यतीत होता है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों में कुल वैवाहिक समस्याओं का विवेचन किया है जिनके कारण नारी का जीवन अभिशाप बन गया है। 'सेवासदन' की सुमन के बाल्यकाल की भोग–विलासपूर्ण जीवन प्रवृत्ति विवाह के बाद नहीं बदल पाती जिसके कारण उसे गहरा असंतोष रहता है। प्रेमचंद लिखते हैं–

''उसने अपने घर यही सीखा था कि मनुष्या को जीवन में सुख भोग करना चाहिए। उसने कभी वह धर्म चर्चा न सुनी थी, वह धर्म शिक्षा न पाई थी जो मन में संतोष का बीजारोपण करती है। उसका हृदय असंतोष से व्याकुल रहने लगा।''[1]

सुमन की तरह ही 'गबन' की जालपा में विवाह से पूर्व जिन रूचियों का विकास होता है उनमें जालपा का आभूषण प्रेम भी था। जालपा का पालन–पोषण आभूषण मंडित वातावरण में हुआ था लेकिन विवाह बाद इसी प्रेम के चलते उसका वैवाहिक जीवन प्रभावित होता है। इस संबंध में प्रेमचंद लिखते हैं–

''दीनदयाल जब कभी प्रयाग जाते तो जालपा के लिए कोई ना कोई आभूषण जरूर लाते। उनकी व्यवहारिक बुद्धि में यह विचार ही ना आता था कि जालपा किसी और चीज से अधिक प्रसन्न हो सकती है.... इसलिए जालपा आभूषणों से ही खेलती थी। यही उसके खिलौने थे।''[2]

ससुराल में चंद्रहार मिलने की आशा दिलाए जाने पर जालपा सोचती है–

''ससुराल से चंद्रहार आएगा। वहां के लोग उसे माता–पिता से अधिक प्यार करेंगे तभी तो जो चीज यह लोग नहीं बनवा सकते, वह वहां से आएगी।''[3]

विवाह पूर्व का प्रेम संबंध

बाल्यकालीन वृत्तियों के साथ–साथ प्रेमचंद ने नारी की विवाह पूर्व की किशोरकालीन प्रवृत्त्यिों का भी उद्घाटन किया है और दिखलाया है कि उनका नारी के वैवाहिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। बाल्यावस्था के बाद किशोरावस्था में प्रवेश करने पर नारी और पुरूष का एक दूसरे की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक है। बाल्यावस्था का स्नेह सम्बन्ध प्रायः आगे चलकर प्रेम में परिणित हो जाता है। ऐसी स्थिति में किसी दूसरे पुरुष से विवाह होने पर नारी के वैवाहिक जीवन में अनेक विसंगतिया आ जाती हैं। 'वरदान' उपन्यास में प्रेमचंद इसी समस्या पर प्रकाश डालते हैं–

''विरजन और प्रताप बाल्यावस्था से ही साथ साथ खेले हैं। थोड़ी बड़ी होने पर विरजन प्रताप के साथ अपने विवाह का स्वप्न देखने लगती है।''[4]

विवाह से पूर्व मातृत्व की संभावना

जहां विवाह से पूर्व मातृत्व की संभावना उपस्थित हो जाती है वहां प्रेम संबंध लज्जास्पद बन जाता है। प्रेमचंद की प्रेम संबंधी धारणा अत्यंत उच्च और आदर्शपूर्ण थी। इसलिए आदर्श प्रेम संबंधों को उन्होंने सर्वत्र ही शारीरिक संबंधों से दूर रखा है। लेकिन जहां वे किसी सामाजिक समस्या के उद्घाटन के लिए स्त्री पुरूष के संबंध पर दृष्टिपात करते हैं वहां उन्होंने इस समस्या का भी स्पष्ट किया है। 'मिस पद्मा' कहानी में पाश्चात्य आदर्शों से प्रभावित नवयुवती का चित्रण

करते हुए प्रेमचंद ने प्रोफेसर प्रसाद से बिना विवाह किए उसके साथ रहने वाली पदमा के गर्भवती होने के बारे में लिखा है–

"पदमा के लिए मात्त्व अब बड़ा ही अप्रिय प्रसंग था। उस पर एक चिंता मंडराती रहती कभी–कभी वह भय से कांप उठती और पछताती।"[5]

परिवारिक चिंताओं का सूत्रपात

वैवाहिक जीवन में होने वाली को प्रथाओं के चलते कन्या का विवाह माता पिता के लिए जटिल समस्या बन जाता है। इसलिए कन्या के विवाह को लेकर पारिवारिक चिंताओं का सूत्रपात होता है। प्रेमचंद्र इन समस्याओं के कारणों से भलीभांति परिचित थे। 'सेवासदन' और 'गोदान' में उन्होंने अभिभावकों की भी चिंता का यथार्थ चित्रण किया है। 'सेवासदन' की गंगाजली अधिक खर्च करने वाले अपने पति कृष्णचंद्र की आदत से व्यथित रहती है। वह जानती है कि लड़कियों का विवाह टाला नहीं जा सकता और इसके लिए पर्याप्त धन चाहिए। बड़ी बेटी सुमन को 16 वर्ष लग जाने पर गंगाजली की चिंता के बारे में प्रेमचंद्र लिखते हैं–

"अब कृष्णचंद्र अपने को अधिक धोखा ना दे सके। उनकी पूर्वनिश्चिंता वैसी न थी जो अपनी सामर्थ्य के ज्ञान से उत्पन्न होती है। उसका मूल कारण उनकी अकर्मण्यता थी उस पति की भांति जो दिन भर किसी वृक्ष के नीचे आराम से सोने के बाद संध्या को उठे और सामने एक ऊंचा पहाड़ देखकर हिम्मत हार बैठे। दरोगा जी भी घबरा गए। वर की खोज में दौड़ने लगे। कई जगहों से टिप्पणियां मंगवाई।"[6]

'गोदान' के होरी की इसी प्रकार की चिंता को प्रेमचंद ने इन शब्दों में प्रकट किया है–

"सोना सत्रहवें साल में थी और इस काल उसका विवाह करना आवश्यक था। होरी तो 2 साल से इसी फिक्र में था। पर हाथ खाली होने से कोई काबू न चलता था। मगर इस साल जैसे भी हो उसका विवाह कर देना ही चाहिए। चाहे कर्ज लेना पड़े, चाहे खेत गिरों रखने पड़े।"[7]

अपने उपन्यास 'निर्मला' में प्रेमचंद ने दहेज की समस्या का यथार्थ रूप में वर्णन किया है निर्मला के लिए वर खोजने को मोटेराम शास्त्री को बहुत दौड़ना पड़ा। क्योंकि निर्मला की मां क्लयाणी के पास पर्याप्त धन नहीं था। वैवाहिक संबंध निश्चित करते समय धन को प्रमुखता दी जाती है, कन्या के रूप गुण को नहीं। प्रेमचंद इस संबंध में व्यंग करते हुए लिखते हैं–

"वह (निर्मला) रूपवती है, गुणशील है, चतुर है, कुलीन है तो हुआ करें। दहेज हो तो सारे दोष गुण हैं। गुणों का कोई मूल्य नहीं, केवल दहेज का मूल्य है।"[8]

अनमेल विवाह की समस्या

नारी जीवन अनेक सामाजिक कुप्रथाओं की श्रृंखला से जकड़ा हुआ है। दहेज के अलावा अनमोल विवाह भी इसी तरह की समस्या होते हैं। प्रेमचंद ने 'सेवासदन', 'निर्मला' उपन्याओं में दहेज के अभाव में पात्रों के गले मढ़ दी जाने वाली नारी का वर्णन किया है। 'सेवासदन' की सुमान का गजाधर प्रसाद से और 'निर्मला' का मुंशी तोताराम से विवाह अनमोल विवाह है। यह दोनों ही अनमोल विवाह दहेज की कुप्रथा के कारण हुए हैं।

दहेज के अभाव में निर्मला का विवाह प्रौढ़ दोहाजू गजाधर प्रसाद से कर दिया गया। सुमन और गजाधर में आयु का अंतर तो है ही, उनका स्वभाव भी एक–दूसरे के बिल्कुल विपरीत है। अपने

पिता के यहां सुख–सुविधाओं में पली सुमन को अच्छा खाना और पहनने की आदत है लेकिन सुमन का पति गलाधर प्रसाद कृपण स्वभाव का है। गजाधर प्रसाद के स्वभाव को प्रेमचंद ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–

''जलपान की जलेबियां उसे विष के समान लगती थी। दाल में घी देखकर उसके हृदय में शूल होने लगता।''[9]

40 वर्ष के मुंशी तोताराम से व्याही निर्मल की समस्या भी कुछ ऐसी है। तोताराम को अपनी पहली पत्नी से तीन पुत्र हैं। निर्मला को मुंशी तोताराम से हंसने–बोलने में संकोच का अनुभव होता है। इसका मनोवैज्ञानिक कारण है जिका उद्‌घाटन करते हुए प्रेमचंद लिखते हैं–

''अब तक ऐसा ही एक आदमी उसका पिता था जिसके सामने वह सिर झुकाकर, देह चुराकर निकलती थी। अक उनकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था। वह उसे प्रेम की वस्तु नहीं सम्मान की वस्तु समझती थी। उनसे भागती फिरती, उनको देखते ही उसकी प्रफुल्लता पलायन कर जाती थी।''[10]

वृद्ध विवाह और उसके दुष्परिणाम

प्रेमचंद ने वृद्ध विवाह और उसके दुष्परिणामों पर भी अपने उपन्यासों कहानियों में प्रकाश डाला है। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि प्रौढ़ व्यक्ति से विवाह होने पर दांपत्य जीवन में असंतोष की भावना उत्पन्न होती है। लेकिन वृद्ध विवाह का परिणाम अंततोगत्वा और भी भयंकर होता है वृद्ध विवाह प्रायः नवयुवती को असमय ही विधवा बना देता है। 'गबन' के वकील इंदुभूषण ने संतान लालसा में वृद्धावस्था में रतन से विवाह किया। इंदुभूषण के संतान तो नहीं हुई लेकिन विवाह से कुछ वर्ष बाद रतन को निराश्रित छोड़कर वह स्वर्ग सिधार गए। उनके अंतिम समय में रतन ने जालपा को जो पत्र लिखा, उससे उसकी मनः स्थिति का परिचय मिलता है। जालपा को अपने पत्र में वह लिखती है–

''पूर्व जन्म का संस्कार केवल मन को समझााने की चीज है। जिस दंड का हेतु ही हमें न मालूम हो उस दंड का मूल्य ही क्या।..... इस अंधेरे, निर्जन, कांटों से भरे हुए जीवन–मार्ग में मुझे केवल एक टिमटिमाता हुआ दीपक मिला था। मैं उसे आंचल में छिपाए, विधि को धन्यवाद देती हुई, गाती चली जाती थी, पर वह दीपक भी मुझसे छीना जा रहा है! इस अंधकार में मैं कहां जाऊंगी, कौन मेरा रोना सुनेगा, कौन मेरी बांह पकड़ेगा?''[11]

विवाह के संबंध में अभिभावकों की उत्तरदायित्वहीनता

प्रेमचंद ने तत्कालीन वैवाहिक प्रथा और उसके दोषों को सूक्ष्म दृष्टि से परखा था। उन्होंने सुमन, सुखदा और सुमित्रा के संदर्भ में यह स्पष्ट कर दिया है कि विवाह के संबंध में माता–पिता अपने उत्तरदायित्व को गंभीरता से निर्वाह नहीं करते इसलिए प्रायः पति–पत्नी के विचारों एवं जीवन मूल्यों में वैषम्य दृष्टिगत होता है जिसके परिणाम स्वरूप दांपत्य जीवन नरक बन जाता है। 'वरदान' में मुंशी संजीवनलाल ऐसे ही अनुत्तरदायी पिता है। डिप्टी श्यामचरण के परिवार की कुलीनता एवं संपन्नता देखकर वे अपनी पुत्री का विवाह उनके पुत्र कमलाचरण से कर देते हैं। कमलाचरण के चरित्र के विषय में उन्होंने कोई छानबीन नही की। मानो परिवार की सम्पन्नता ही सब कुछ है। 'कर्मभूमि' के अमर और सुखदा का विवाह भी दोनों परिवारों की संपत्ति और धन वैभव को दृष्टि में रखकर ही हुआ है। प्रेमचंद लिखते हैं–

''ब्याह जोड़ का होता है कि ऐसा बेजोड़। लड़की कंगाल को दे दे, पर बूढ़े को न दे। गरीब रहेगी तो क्या जन्म भर का रोना–झींकना तो ना रहेगा।''[12]

प्रेमचंद के मतानुसार दहेज के विरूद्ध जनमत तैयार करके इस कुप्रथा का उन्मूलन करना आवश्यक है। नवयुवकों का कर्तव्य है कि वे अपने अभिभावकों की दहेजलोभी प्रवृत्ति का विरोध करें। वर्तमान परिस्थितियों में प्रेमचंद का यह अनुमान सत्य होने की भूमिका प्रस्तुत कर रहा है।

विधवा जीवन पर लगे निषेध और उनके दुष्परिणाम

विधवा जीवन पर समाज द्वारा लगाए गए तमाम प्रकार के निषेध तथा उनके कुपरिणामों का चित्रण प्रेमचंद ने 'प्रेमा' उपन्यास में किया है। पड़ोसियों की आलोचनाओं के कारण इस उपन्यास की विधवा पूर्णा का जीवन दुस्सह हो जाता है। उसकी पड़ोसिनें उसे कंघी–चोटी न करने तथा केश कटवा डालने की शिक्षा देती हैं। नाना प्रकार के निषेधों के कारण ही इस उपन्यास की विधवा रामकली कुमार्ग पर चलने लगती है। सास के व्यंग बाणों से बचने के लिए वह गंगा स्नान का बहाना करके नित्य घर से निकल जाती है और निरूद्देश्य इधर–उधर घूमा करती है। 'नैराश्यलीला' कहानी में प्रेमचंद ने इस मनोवैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन किया है कि विधवा नारी सामाजिक प्रतिबंधों से क्यों घृणा करती है।

'नैराश्यलीला' कहानी की बाल विधवा कैलाशी कुछ वर्षों तक तो माता–पिता के दिखाए मार्ग पर चलती है लेकिन उसे शीघ्र अनुभव होता है कि समाज उसके प्रत्येक कार्य की आलोचना कर रहा है। अतः उसका हृदय सामाजिक बंधनों के प्रति तीव्र विद्रोह से भर जाता है। पिता के लोक–मर्यादा का रोना रोने पर वह विद्रोह भरे स्वर में कहती है–

''तो कुछ मालूम भी तो हो कि संसार मुझसे क्या चाहता है। मुझ में जीव है, चेतना है, जड़ क्यों कर बन जाऊं!.... संसार मुझे जो चाहे समझे, मैं अपने को अभागिन नहीं समझती। मैं अपने आत्म–सम्मान की रक्षा आप कर सकती हूं। मैं इसे अपना घोर अपमान समझती हूं कि पग–पग पर मुझ पर शंका की जाए, नित्य कोई चरवाहों की भांति मेरे पीछे लाठी लिए घूमता रहे कि किसी खेत में न जा पड़ूँ।''[13]

आर्य समाज का दृष्टिकोण

प्रेमचंद युग में आर्य समाज विधवा विवाह का प्रचार कर रहा था। साथ ही उसने विधवाओं के लिए अनेक विधवाश्रम भी खोले थे। सनातन धर्मों हिंदू सुधारकों के इन कार्यों की तीव्र आलेचना करते थे और उनके प्रयत्नों को निष्फल बनाने का भी प्रयास करते थे। प्रेमचंद के 'प्रेमा' और 'प्रतिज्ञा' उपन्यासों में समाज सुधारकों एवं सनातन धर्मी हिंदुओं के इस संघर्ष का यथार्थ चित्रण अंकित हुआ है। 'प्रेमा' उपन्यास में अमृतराय विधवा पूर्णा से विवाह करने का निश्चय करते हैं जिससे शहर में हलचल मच जाती है। लोगों को विश्वास ही नहीं होता कि वे

''इतने मान मर्यादा के रईस होकर ऐसा नीच कर्म करेंगे।''[14]

कट्टर हिंदुओं का निश्चय है कि यह विवाह नहीं होने देंगे। दूसरी ओर समाज सुधारक इस विवाह का पक्ष लेते हैं।

'प्रतिज्ञा' के लाला बद्रीप्रसाद के माध्यम से प्रेमचंद ने सनातन धर्मी हिंदुओं की विचारधारा और उनके द्वारा होने वाले सुधारों के विरोध का चित्रण किया है।

''इससे सारा समाज नष्ट हो जाएगा। हम इससे कहीं अधोगति को पहुंच जाएंगे। हिंदुत्व का रहा सहा चिन्ह भी मिट जाएगा।''[15]

ऐसा लगता था मानो हिंदुत्व की रक्षा का भार विधवाओं के ही ऊपर है। अमृतराय के विधवा से विवाह करने की प्रतिज्ञा ले लेने पर वे उससे किसी तरह का संबंध नहीं रखना चाहते।

प्रेमचंद का दृष्टिकोण

प्रेमचंद ने विधवा नारी की समस्या के सभी पक्षों का यथार्थ चित्रण के साथ इसका समाधान भी अपने उपन्यासों और कहानियों में प्रस्तुत किया है। 'प्रतिज्ञा' में बाबू अमृतराय बनिताश्रम की स्थापना करते हैं जिसमें अनाथ विधवाऐं रहती हैं। नगर की योग्य महिलाऐं विधवाओं को विविध प्रकार की शिक्षा देती है। प्रेमचंद की 'धिक्कार' कहानी में इस संबंध में उनका बहुत ही सुलझा हुआ दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है। इस कहानी का आदर्श पात्र इंद्रनाथ विधवा मानी के विवाह का प्रश्न उठने पर कहता है–

''मैं विधवाओं के पुनर्विवाह के पक्ष में नहीं हूँ। मेरा ख्याल है कि पतिव्रता का यह अलोकिक आदर्श से संसार का अमूल्य रत्न है और हमें बहुत सोच समझकर उस पर आघात करना चाहिए। लेकिन मानी के विषय में यह बात ही नहीं उठती, प्रेम और भक्ति नाम से नहीं व्यक्ति से होती है। जिस पुरूष की उसने सूरत भी नहीं देखी उससे प्रेम नहीं हो सकता। केवल रस्म की बात है। आडंबर की, इस दिखावे की हमें परवाह नही करनी चाहिए।''[16]

प्रेमचंद ऐसी विधवाओं के ही पुनर्विवाह का समर्थन करते हैं जिनका विवाह के बाद अपने पति से कभी कोई संबंध नहीं रहा और जो केवल इसलिए विधवा कहलाती हैं कि किसी पुरूष के साथ उन्होंने भांवरे ली थी।

शिक्षित नारी में आर्थिक स्वावलंबन की भावना तथा विवाह के प्रति घृणा

प्रेमचंद युग में स्त्रियां पर्याप्त संख्या में उच्च शिक्षा पाने लगी थी। शिक्षित स्त्रियों में आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त करने एवं विवाह न करने की प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती जा रही थी।

'मिस पद्मा' कहानी में प्रेमचंद ने पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित शिक्षित नारी का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। मिस पद्मा उच्च शिक्षा प्राप्त करके वकालत करती हैं और सफल भी होती हैं। पदमा विवाह को एक अप्राकृतिक बंधन समझती हैं। इसलिए वह स्वतंत्र रहने का निश्चय करती हैं।

पदमा की ही तरह 'विश्वास' कहानी की मिस जोशी भी अविवाहित हैं। मुंबई के गवर्नर मिस्टर जौहरी उसके इशारों पर चलते हैं। मिस जोशी अपने विष में कहती हैं–

''मेरी उच्च शिक्षा ने गृहणी जीवन से मेरे मन में घृणा पैदा कर दी। मुझे किसी पुरूष के अधीन रहने का विचार अस्वाभाविक जान पड़ता था। मैं गृहणी की जिम्मेदारियों और चिंताओं को अपनी मानसिक स्वाधीनता के लिए विष–तृल्य समझती थी। मैं तर्कबुद्धि से अपने स्त्रीत्व को मिट देना चाहती थी। मैं पुरूषों की भांति स्वतंत्र रहना चाहती थी..... दांपत्य मेरी निगाह में तुच्छ वस्तु थी।''17

निष्कर्ष

प्रेमचंद साहित्य में नारी जीवन और उसकी समस्याओं का विशद विवेचन हुआ है। प्रेमचंद ने जहां एक और नारी की सामाजिक पराधीनता और उसके फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं को अपने उपनयासों और कहानियों में अभिव्यक्ति प्रदान की है वहीं दूसरी ओर प्रेमचंद ने यह भी दिखलाया

है कि शिक्षित नारी किस प्रकार सामाजिक अन्याय से मुक्ति पाने के लिए आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बन रही है और विवाह से घृणा करने लगी है।?

प्रेमचंद का मत है कि सामाजिक अन्याय एवं अत्याचार को मिटाना आवश्यक है लेकिन साथ ही वे सचेत कर देते हैं कि अन्याय को मिटाने के प्रयत्न में नारी कहीं स्वंय को ना मिटा दें। प्रेमचंद नारी को पुरुष से महान मानते थे। 'गोदान' में इसका स्मरण करें तो पाएंगे।

''स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अंधेरे से। मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है।'' [18]

प्रेमचंद की दृष्टि में नारी जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए यह आवश्यक है कि नारी को पुरुष के बराबर के अधिकार प्राप्त हो। अधिकारों के क्षेत्र में पुरुष और स्त्री न केवल समान हो, अपितु उनमें सद्भाव एवं सहयोग की भावना भी उत्पन्न हो जिससे समाज और परिवार अपने विकास के पथ पर अग्रसर हो सके।

संदर्भ

1. (1961). सेवासदन, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **18.**
2. (1961). गबन, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ **2.**
3. (1961). गबन, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ **3.**
4. (1962). वरदान, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ **17.**
5. मिस पदमा, मानसरोवर–भाग 2, पृष्ठ **96.**
6. (1961). सेवासदन, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **6.**
7. (1961). गोदान, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **257.**
8. (1961). निर्मला, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **55.**
9. (1961). सेवासदन, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **17.**
10. (1961). निर्मला, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **59.**
11. (1961). गबन, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ **193.**
12. (1961). कायाकल्प, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनासर, पृष्ठ **126.**
13. (1962). नैराश्यलीला, मानसरोवर–भाग 3, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **63.**
14. (1962). प्रेमा, मंगलाचरण, अमृतराय, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ **308.**
15. (1961). प्रतिज्ञा, प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ **10.**
16. (1961). धिक्कार, मानसरोवर–भाग 3, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **220.**
17. (1962). विश्वास, मानसरोवर–भाग 3, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **15.**
18. (1961). गोदान, प्रेमचंद, सरस्वती प्रेस बनारस, पृष्ठ **163.**